RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-02
February-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

शाहजहां का शासनकाल : मुगलकाल का स्वर्ण–युग

संध्या रानी

यू०जी०सी० नेट, इतिहास कानपुर, उ०प्र०, भारत

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 20February 2019

Keywords
मेवाड़, शाहजहां, ट्रेवर्नियर, भू–राजस्व, चित्रकला।

ABSTRACT

शाहजहां का शासनकाल (1628–1658) मुगलकाल का स्वर्ण युग कहलाता है, क्योंकि इस अवधि में प्रत्येक क्षेत्र में विशेष उन्नति हुई और साम्राज्य अपने गौरव के शिखर पर जा पहुंचा। शाहजहाँ के राज्यकाल में वे सारी विशेषताएँ विद्यमान थीं, जिनके आधार पर उसके शासनकाल को स्वर्ण–युग कहा जा सकता है। राजनीतिक दृष्टिकोण से शाहजहां के युग में शांति, सुरक्षा और मैत्री का वातावरण था और किसी प्रकार के आन्तरिक विद्रोह का भय नहीं था। राजपूत राज्य के हितैषी, मित्र तथा शुभचिन्तक बन चुके थे। मेवाड़ का राणा एक प्रकार से मुगल मनसबदार बन चुका था। उत्तर–पश्चिम में कन्धार के अतिरिक्त समस्त मुगल प्रदेश पूर्णरूप से सुरक्षित थे। काबुल मुगल साम्राज्य का अंग बन चुका था और उसमें अन्य राज्यों जैसी शासन–व्यवस्था विद्यमान थी। दक्षिण भारत में मुगल प्रभुत्व का बोलबाला रहा। मराठे शक्तिशाली नहीं हुए थे। अतः मुगलों को उनकी ओर से कोई खतरा नहीं था। पुर्तगालियों का पतन हो चुका था। संक्षेप में, शाहजहां के राज्य में पूर्ण सुख–शान्ति थी और देश आन्तरिक तथा विदेशी आक्रमणों से सुरक्षित था।

शाहजहां का शासन–प्रबन्ध प्रजा–हितैषी तथा अकबर की शासन की शासन–प्रणाली के ठोस नियमों पर आधारित था। उसने प्रजा के जीवन को सुखी तथ समृद्धशाली बनाने का अथक् प्रयास किया। शासन के क्षेत्र में सर्वत्र कार्य–कुशलता बनी रही। फ्रांसीसी यात्री ट्रेवर्नियर के अनुसार, 'सम्राट् का शासन पितृ–स्नेह से युक्त था और वह अपनी कार्य–कुशलता के लिए विख्यात था। खाफी खां ने भी शाहजहां के शासन–प्रबन्ध की काफी प्रशंसा की है। विदेशी यात्री मनूची ने लिखा है कि सम्राट् राज्य कार्य में बहुत रूचि लेता था। वह सरकारी पदों पर योग्य व्यक्तियों को नियुक्त करता था। अपराधी अधिकारियों को कठोर दण्ड देता था। शासन–प्रबन्ध की कुशलता के कारण उसकी आय में दिन–प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही थी और देश में सुख–शान्ति का वातावरण था। तत्कालीन इतिहासकार खाफी खां ने लिखा है– ''यद्यपि विजेता और व्यवस्थापक की दृष्टि से अकबर श्रेष्ठत्तम था, परंतु अपनी भूमि और अर्थ–व्यवस्था, शान्ति और व्यवस्था और राज्य के प्रत्येक विभाग के अच्छे शासन–प्रबन्ध की दृष्टि से ऐसे किसी बादशाह ने भारत में शासन नहीं किया, जिससे शाहजहां की तुलना की जा सके।''

शाहजहां के राज्यकाल में वाणिज्य और व्यापार की बहुत अधिक उन्नति हुई। उसके कुशल शासन–प्रबन्ध तथा किसानों के प्रति सहानुभूति के कारण कृषकों की दशा में भारी सुधार हुआ। फलस्वरूप अकबर के समय में जिस परगने की वार्षिक आय तीन लाख रूपये थी, उससे अब सरकार को इस लाख रूपये प्रतिवर्ष की आय होने लगी। मोरलैण्ड के अनुसार, ''शाहजहां का शासनकाल कृषकों के लिए सुख और शान्ति का समय था और केवल राजस्व विभाग की वार्षिक आय 21 करोड़ रूपये थी।'' सम्राट् द्वारा बलख, बदख्शा, कन्धार सम्बन्धी अभियानों तथा भवन–निर्माण कार्यों पर अपार धन व्यय करने पर भी उसकी मृत्यु के समय 400 लाख रूपए शाही कोष में थे। विदेशी यात्री बर्नियर ने उस समय की समृद्ध अवस्था का वर्णन करते हुए लिखा है, ''बंगाल में जीवन–रक्षक वस्तुओं की बहुलता थी, जिसके कारण विदेशी लोग इस राज्य में बसना चाहते थे। चीनी, कपास तथा रेशमी कपड़े की कमी नहीं थी, बल्कि ये वस्तुएँ विभिन्न देशों में निर्यात की जाती थीं। विदेशी व्यापार साम्राज्य की आय का महत्त्वपूर्ण साधन था।''

शाहजहां अपनी प्रजा की सुख–सुविधा और समृद्धि के लिए विशेष रूप से चिन्तित रहता था। वह सबके साथ एक जैसा न्याय करता था। ट्रेवर्नियर ने लिखा है, 'शाहजहां अपनी प्रजा को अपनी संतान के समान समझता था और उस पर एक सम्राट् के समान नहीं, वरन् पिता के समान राज्य करता था।'' सम्राट् संकटकाल में पीड़ित प्रजा की हर संभव सहायता करता था। दक्षिण में अकाल के समय सम्राट् ने किसानों का भूमि–कर का 1/3 भाग माफ कर दिया, पीड़ित जनता में लाखों रूपए बांटे और भूखों के लिए मुफ्त भोजन–भण्डार खोल दिए। विदेशियों के प्रति भी सम्राट के हृदय में सद्–व्यवहार की भावना थी। एस. आर. शर्मा के अनुसार– ''यद्यपि साम्राज्य में धनवानों की अपेक्षा निर्धनों की संख्या कहीं अधिक थी, तथापि जन–साधारण के लिए जीवन–रक्षक वस्तुओं का अभाव नहीं था।

शाहजहां के शासनकाल में सांस्कृतिक क्षेत्र में भी विशेष उन्नति हुई। उसने अपने दरबार में कलाकारों एवं साहित्यकारों को उदारता से संरक्षण प्रदान किया, जिन्होंने अपने–अपने क्षेत्र

RRIJM 2015, All Rights Reserved

में प्रशंसनीय रचनाएँ रचीं। के. टी. शाह के अनुसार, ''शाहजहाँ के समय में असाधारण सांस्कृतिक उन्नति का मुख्य कारण यह था कि सम्राट बड़ी उदारता से प्रत्येक कलाकार को संरक्षण प्रदान करता था और समय–समय पर पुरस्कारों द्वारा उनको प्रोत्साहन भी देता था।''

शाहजहां ने चित्रकला को भी बहुत प्रोत्साहन दिया। सम्राट स्वयं एक अच्छा चित्रकार था। उसने अपने दरबार में मीर हाशम, चित्रमणी, अनूपचित्र और फकीर उल्ला जैसे प्रसिद्ध चिकारों को संरक्षण दे रखा था। सम्राट द्वारा इस क्षेत्र में रूचि लेने के कारण चित्रकला ने विशेष प्रगति की। मध्यकालीन अर्थव्यवस्था के अंतर्गत उत्पादन उपभोग तक ही सीमित था विनिमय के लिए नहीं था, तथा मुद्रा आधारित अर्थव्यवस्था व व्यापारिक वस्तुओं का उत्पादन ब्रिटिश काल की ही देन है–यह मत अब स्वीकार्य नहीं है। आज ऐसे बहुत से साक्ष्य उपलब्ध हैं जिनके आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सत्रहवीं शताब्दी के मुगल साम्राज्य के अधिकांश भागों में एक विकसित बाजार व्यवस्था कायम थी। यह व्यवस्था व्यापारिक पत्र–व्यवहार, बीमा पद्धति तथा बैंकिंग प्रणाली पर आधारित थी। मुद्रा–व्यवहार व चलन की व्यापकता से सहज ही अनुभव लगाया जा सकता है कि ब्याज वृत्ति तथा ऋण आदि की सुविधाएँ भी अपने विकसित रूप में विद्यमान रही होंगी। इन सभी विशेषताओं के बावजूद भी सत्रहवीं शताब्दी में भारत में पूँजीवाद का विकास नहीं हुआ जिसका मुख्य कारण यह था कि तत्कालीन वाणिज्य हस्त–शिल्प उत्पादन के अपरिवर्तित तरीके पर ही आधारित था।

मुद्रा आधारित अर्थव्यवथा का विकास भी मुगलों की राजस्व नीति का ही परिणाम था। अकबर के काल से ही काश्तकारों के उत्पादन अतिरेक का अधिकांश भाग नकद ही वसूल किया जाता था। इस प्रवृत्ति के कारण ही सुस्थापित नकद–चुकौती या नकदी अभिबंध संभव हो पाया। इस कारण मुद्रा–चलन की व्यापकता में भी वृद्धि हुई। मुद्रा चलन की व्यापकता तथा मात्रा का अनुमान लगाना कठिन है। किंतु विलियम हॉकिन्स के विवरण के अनुसार जहाँगीर के शासनकाल के आरंभिक वर्षों में लगभग 250 करोड़ रूपये चलन में थे। अबुल फजल ने अपनी कृति 'आइने अकबरी' में साम्राज्य की अनुमानित आय 90 करोड़ रूपये आँकी है। किंतु चाँदी के मूल्य में गिरावट तथा दकनी राज्यों में मुगल साम्राज्य में विलय के पश्चात सत्रहवीं शती के अंत में कुल हासिल (वास्तविक आय) का परिणाम 240 करोड़ रूपये तक पहुँच गया। यह कहना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि मुगल साम्राज्य तत्कालीन समय में विश्व के ऐसे देशों में से एक था जहाँ की मुद्रा व्यवस्था सर्वश्रेष्ठ कही जा सकती थी। यहाँ पर तीन प्रकार की धातुओं (सोने की मुहर, चाँदी का रूपया एवं ताँबे का दाम) के सिक्के चलन में थे जिनकी एकरूपता तथा शुद्धता सराहनीय है। चाँदी का सिक्का–रूपया इस व्यवस्था का आधार था।

मुद्रा–टंकण के इतिहास में शेरशाह का महत्वपूर्ण स्थान है। उसने एक ऐसी मुद्रा–प्रणाली की स्थापना का प्रयास किया जो खोट–रहित थी। चाँदी के रूपये के अतिरिक्त शुद्ध सोने व चाँदी के सिक्के चलाने में भी शेरशाह ने सराहनीय प्रयास किए। किंतु, वस्तुतः अकबर के काल में ही एक सुविकसित मुद्रा प्रणाली की स्थापना हुई। इस प्रणाली का मुख्य आधार रूपया था। मुगलों की मुद्राओं का प्रचलन राज्य द्वारा नियंत्रित टकसालों के माध्यम से किया जाता था। ये टकसालें पूरे साम्राज्य में स्थित थीं। अबुल फजल के अनुसार 1595 ई. में लगभग 42 टकसालों में ताँबे के सिक्कों की ढलाई की गई। 14 टकसालों में चाँदी का रूपया एवं 4 टकसालों में सोने की मुहरें ढाली गई। औरंगजेब के काल में रूपयों की ढलाई के परिमाण में वृद्धि हुई जिसका कारण मुख्यतः साम्राज्य के आकार में वृद्धि था। साथ ही इस काल में टकसालों की मात्रा में भी वृद्धि हुई। इरफान हबीब के अनुसार पूरी शताब्दी पर्यन्त रूपये के वनज में एकरूपता बनाए रखने का श्रेय मुगल प्रशासन को ही जाता है। यह प्रशासन की उल्लेखनीय उपलब्धि थी। मुगल साम्राज्यकालीन टकसालें केंद्रीय नियंत्रण के अंतर्गत होते हुए भी ढलाई के क्षेत्र में इतनी हद तक स्वतंत्र थीं कि कोई भी व्यक्ति वहाँ चाँदी ले जाकर सिक्के ढलवा सकता था।

बड़े–बड़े सौदों के संबंध में नकद मुद्रा के अतिरिक्त ऋण की भी व्यवस्था होती थी। इस संबंध में यूरोप के समान ही हुन्डियों की भी व्यवस्था होती थी। इन्हें हुन्डवी भी कहा जाता था। हुंडियों की विवेचना मुगलों के अंतर्गत बैंकिग व्यवस्था का विवरण देते समय की जाएगी।

मुगलों के अंतर्गत विकसित बैंकिंग प्रणाली का मूल्यांकन मुद्रा के व्यापक प्रसार और चलन के संदर्भ में ही करना चाहिए। भू–राजस्व की नकद वसूली का अर्थ था कि मुद्रा–प्रधान अर्थव्यवस्था की व्यूह रचना से गाँव भी अलग नहीं थे। इसी कारण प्रत्येक गाँव में सर्राफों के वर्ग का उदय हुआ। टैवर्नियर का कथन है ''भारत में वह गाँव वास्तव में बहुत ही छोटा होना चाहिए जहाँ पर सर्राफ मौजूद नहीं है। ये बैंकर का कार्य भी करते थे अर्थात् रूपया भेजने और हुन्डी जारी करने का कार्य भी करते थे।'' सर्राफों का यह वर्ग प्रत्यक्ष रूप से लेन–देन व क्रय–विक्रय व्यवहार में भाग लेता था। एल. सी. जैन की कृति से सिद्ध होता है कि आधुनिक भारत में सर्राफों का व्यवसाय जाति व्यवस्था के प्रभाव से बच नहीं सका है तथा इस व्यवसाय का फायदा केवल कुछ वाणिज्य संलग्न समुदायों द्वारा ही उठाया गया है। यह कहना गलत न होगा कि मुगल काल में भी यही स्थिति थी।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. श्रीवास्तव, ए. एल. : मुगलकालीन भारत
2. शर्मा, जी. एन. : मेवाड़ एण्ड द मुगल रिलेशन्स
3. ईश्वरीप्रसाद : ए शॉर्ट हिस्ट्री ऑफ मुस्लिम रूल इन इण्डिया
4. जाफर, एस. एम. : मुगल एम्पायर
5. स्मिथ, वी. ए. : ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ इण्डिया
6. शर्मा, एस. आर. : द मेकिंग ऑफ मॉर्डन इण्डिया

RRIJM 2015, All Rights Reserved